This question paper contains 4 printed pages.]

316 *आपका अनुक्रमांक .....*

B.A. (Programme) / II Sem. **B**

Hindi Language (B) – Paper B

(आधुनिक भारतीय भाषा : हिन्दी 'ख')

(प्रवेश-वर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. आज़ादी से पूर्व हिन्दी भाषी प्रदेशों का सामान्य परिचय दीजिए। 9

अथवा

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी की भूमिका पर विचार कीजिए।

2. राष्ट्रभाषा और राजभाषा के अंतर को स्पष्ट कीजिए। 9

अथवा

मानक हिन्दी की विशेषताएँ बताइए।

[P.T.O.

3. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 7

(i) सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी

(ii) राजभाषा की संवैधानिक स्थिति

4. संचार माध्यम की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसकी सामाजिक भूमिका पर प्रकाश डालिए। 9

अथवा

प्रिन्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के समाचारों की भाषा का अंतर स्पष्ट कीजिए।

5. विज्ञापनों की भाषा का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 9

अथवा

'एफ.एम. रेडियो' में प्रयुक्त मनोरंजन की भाषा का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

6. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 7

(i) खेल समाचारों की भाषा

(ii) 'रिअल्टी शोज' की भाषा

7. किन्हीं **पाँच** का हिन्दी प्रतिरूप लिखिए : 5

Bureaucracy, Complex, Dividend, Hold the Candle to the Sun, Pull one's leg, To do one's level best, Submitted for orders, The proposal is quiet in order, Needful has been done.

8. टिप्पण का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

प्रारूपण का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

9. अपने क्षेत्र की सड़क की दशा सुधारने के लिए नगर निगम अधिकारी को पत्र लिखिए। 5

अथवा

अध्यापक पद हेतु आवेदन के लिए स्ववृत्त (बायोडाटा) तैयार कीजिए।

10. (1) किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए : 6

(i) टी.वी. कार्यक्रम

(ii) तनावों से घिरी युवा-पीढ़ी

(iii) प्राकृतिक आपदाएँ

(iv) राष्ट्र निर्माण में साहित्यकार की भूमिका

(2) किसी **एक** विषय का पल्लवन कीजिए : 4

(i) मीडिया और हिन्दी

(ii) साँच को आँच नहीं

(iii) अध्ययन के लाभ

(iv) व्यक्ति और समाज

अथवा

निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण करते हुए उपयुक्त शीर्षक दीजिए :

जीवन का उद्देश्य ही आनंद है। मनुष्य जीवन पर्यन्त आनंद की ही खोज में लगा रहता है। किसी को वह रत्न-द्रव्य में मिलता है, किसी को भरे-पूरे परिवार में, किसी को लंबे-चौड़े भवन में, किसी को ऐश्वर्य में; लेकिन साहित्य का आनंद, इस आनंद से ऊँचा है, पवित्र है, उसका आधार सुन्दर और सत्य है। वास्तव में सच्चा आनंद सुन्दर और सत्य से मिलता है। उसी आनंद को दर्शाना, वही आनंद उत्पन्न करना साहित्य का उद्देश्य है। ऐश्वर्य या भोग के आनंद में ग्लानि छिपी होती है। उससे अरुचि भी हो सकती है, पश्चाताप भी हो सकता है पर सुन्दर से जो आनंद प्राप्त होता है, वह अखंड है, अमर है। 10